https://www.echetana.com/Vol.-11, No.-01, Jan.-Mar. 2026, pp. 90-93

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

रवीन्द्र कालिया का कथेतर साहित्य

डॉ ललित कुमार श्रीमाली
शोध निर्देशक
पीरा राम चौधरी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयपुर (राज.)
Email- lalitshrimali2014@gmail.com, Mobile-9461594159,

First draft received: 07.02.2026, Reviewed: 09.02.2026
Final proof received: 11.02.2026, Accepted: 15.02.2026

शोध सारांश

रवीन्द्र कालिया के संदर्भ में यह कहना कठिन है कि वे एक बड़े कहानीकार है अथवा उसने भी उम्दा संस्मरणकार। वे बड़े उपन्यासकार है अथवा सर्वकालिक महत्त्व के ऐसे संपादक जिन्होंने हिंदी साहित्य के लिए एक पूरी की पूरी पीढ़ी तैयार की है। उनके जो संस्मरण है वे हिन्दी साहित्य की अप्रतिम उपलब्धि है। उन्होंने बड़ी ही शिद्दत के साथ अपने सृजन के साथियों एवं अग्रणों के बारे में लिखा है। उनकी कथेतर की प्रमुख पुस्तक 'गालिब छुटी शराब' का मुरीद तो हिंदी साहित्य का हर पाठक है। उन्होंने अपने युग की यथार्थ अभिव्यक्ति एवं संबंधित व्यक्तियों के चरित्रोद्घाटन की जिस कला का प्रयोग अपने ससुंमरणों में किया है वह हिन्दी कथेतर साहित्य की एक महत्वपूर्ण देन है। हम प्रो.आर.डी.शंकर के शब्दों में कह सकते है कि- ''संस्मरणकार की सजग एवं सूक्ष्म दृष्टि ही संस्मरण विधा को बड़ा बनाती है। संस्मरणकार ने अब तक जो संस्मरण लिखे हैं उन ससुंमरणों के आधार पर कह सकते हैं कि 'गालिब छुटी शराब' एवं 'सृजन के सहयात्री' में बहुत ही मार्मिक जीवन प्रसंगों का चित्रण किया है।'' हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। हमारे समय के ऐसे रचनाकार के रूप में हमारे सामने थे जिन्होने एकाधिक विधा में मील के पत्थर स्थापित किए हैं।

मुख्य शब्द : साहित्य, कथेतर, संस्मरण, आत्मकथात्मक.

प्रस्तावना

रवीन्द्र कालिया हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार है। वे हिंदी साहित्य के बहुआयामी गद्यकार थे जो कथाकार, उपन्यासकार, संस्मरणकार एवं संपादक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनकी प्रमुख विधाएँ कथा, उपन्यास, संस्मरण, लंग्य तथा संपादकीय लेखन हैं। कथेतर साहित्य विशेषतः उनके संस्मरण, आत्मकथ्य, निबंध और संपादकीय लेखन में प्रकट होता है, जिसमें उन्होंने स्वयं के अनुभव, समाज-संस्कृति पर टिप्पणियाँ तथा साहित्य- समाज के बीच अन्तर्सम्बन्धों को अभिव्यक्त किया है। उनका कथेतर गद्य हिन्दी साहित्य में ईमानदार निर्भीक और समय से टकराता हुआ गद्य माना जाता है। यह लेखन उन्हें केवल कथाकार नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण विचारक भी बनाता है। उन्होंने अपने समय, जीवन-अनुभवों, साहित्यिक संसार और समकालीन लेखकों पर आत्मीय एवं बेबाक ढंग से लिखा। इनके लेखन में व्यक्तिगत स्मृतियाँ और सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ साथ-साथ चलते हैं। अपने संस्मरणों में अपनी यादों, कालखण्डों और साहित्यिक अनुभवों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी पुस्तकें उनका लेखन उनके समय और लेखक की अनुभूतियों का प्रत्यक्ष दस्तावेज है।

उनके निबन्धों में सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विषयों पर स्पष्ट दृष्टिकोण मिलता है। व्यंग्य शैली के गद्य को उन्होंने समाज की और मानवीय विसंगतियों को उजागर किया है। नया ज्ञानोदय जैसी प्रमुख पत्रिका के संपादन के दौरान उनके संपादकीय विचारों में हिंदी साहित्य के समकालीन विमर्श, युवा लेखकों के स्थान और साहित्य-समाज के समीकरण भी देखने को मिलते है। प्रस्तुत शोधपत्र में रवीन्द्र कालिया के कथेतर साहित्य में संस्मरणात्मक एवं आत्मकथात्मक लेखन का गहन अनुशीलन किया है।

संस्मरण और आत्मकथात्मक लेखन

रवीन्द्र कालिया का कथेतर उनकी व्यक्तिगत स्मृतियों और अनुभवों का संग्रह है। गालिब छुटी शराब में उन्होंने आत्मकथात्मक लेखन ही किया है। ममता कालिया लिखती है कि रवीन्द्र कालिया ने यह संस्मरण विषम परिस्थितियों में लिखना आरम्भ किया था। उनका यकृत बिगड़ चुका था; साकी ने जाम उनके हाथ से छीन लिया था, महफिलें उठ गयी थीं, यार रुखसत हुए। डॉक्टरों की जाँच, दवाओं की आँच और गिरती सेहत की साँच के सामने यह लेखक हतबुद्धि-सा खड़ा रह गया। कवि नीरज के शब्दों में उसरी हालत ऐसी हो गयी कि

'कारवाँ गुजर गया। गुबार देखते रहे।' डॉ. सीमा शर्मा अपने एक आलेख में लिखती है कि ''गलिब छुटी शराब रवीन्द्र कालिया जी का आत्मकथात्मक संस्मरण है। इसमें 'स्व' के साथ-साथ पूरे साहित्य जगत से पाठक को बड़े सुरुचिपूर्ण ढंग से परिचित कराते हैं। इस पुस्तक में ऐसी सामथ्र्य है कि जितनी बार पढ़ो, उतनी ही नई और रुचिकर लगती है।....... लेखक अपने साथ कोई सहानुभूति नहीं दिखाते। उन्होंने 'स्व' का चित्रण ऐसी तटस्थता के साथ किया है जैसे किसी और के विषय में लिख रहे हों। वे 'स्व' की कमजोरियों पर हँसने का साहस रखते हैं पर कहीं भी महिमामण्डन नहीं करते, किसी के लिए भी कितना मुश्किल है ऐसा करना?''1

पुस्तक के पहले ही पेज से इसका उदाहरण मिल जाता है, ''अपनी सुविधा के लिए मैंने एक मुहावरा भी गढ़ लिया था-'' शराबी दो तरह के होते हैं. एक खाते-पीते और दूसरे पीते-पीते। मैं खाता पीता नहीं, पीता पीता शख्स था।''2 यह संस्मरण उनकी निजी यात्रा, विचार आधारित प्रतिबिंब तथा समय-परिवर्तन की अनुभूतियों का संयोजन है। इसकी भाषा संवादात्मक तथा सहज है, जिसने पाठक लेखक की मनोभूमि में प्रत्यक्ष प्रवेश कर पाते हैं। इनके संस्मरण आत्म-जागरुकता एवं आत्म चिंतन से ओत-प्रोत हैं। लेखक स्वयं के अनुभवों एवं विकल्पों को बड़ी स्पष्टता से प्रस्तुत करते हैं, जिसने पाठक लेखक-व्यक्तित्व की आतंरिक दुनिया में प्रवेश कर पाता है। वे सीधे-सपाट लेखन से हटकर उन विचारों और अनुभवों को गद्य में उतारते है, जो स्वयं पाठक के लिए सोचने और समझने के अवसर प्रस्तुत करते हैं। उनका लेखन हिंदी संस्मरण लेखन में एक समृद्ध और प्रभावशाली परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी आत्मकथात्मक टिप्पणियाँ बड़ी ही सार्थक है। ''रानीमंडी में शाम को स्नान करने की ऐसी बेहूदा आदत पड़ी जो आज तक कायम है। सूरज नदी में डूब जाता है और हम गिलास में।''3

'गालिब छुटी शराब' में शराब भी एक महत्वपूर्ण पात्र है, और इसके कितने रूप देखने को मिलते हैं। शराब ने लेखक के जीवन में कई तरह की भूमिकाएँ निभाई कभी वह स्फूर्ति प्रदान करने वाली चीज थी, कभी खाने से भी ज्यादा जरूरी तो कभी सबसे ज्यादा जरूरी लेखक के शब्दों में- ''कम पीने में यकीन नहीं था। कोशिश यह थी कि भविष्य में और अच्छी ब्रांड नसीब हो। शराब के मामले में कभी मोहताज़ नहीं रहना चाहता था, न कभी रहा। इसके लिए मैं कितना भी श्रम कर सकता था। भविष्य में रोटी नहीं अच्छी शराब की चिन्ता थी।''4 (लेकिन यही शराब मौत के दरवाजे तक ले जाती है। अगर जीना है तो आदतें बदलना जरूरी है। डॉक्टर ने साफ शब्दों में आगाह किया- ''जिन्दगी या मौत में से आपको एक का चुनाव करना होगा।'' निःसन्देह लेखक ने जीवन का चुनाव किया और पूरी ईमानदारी से किया। इस पूरी पुस्तक में अपनी दुर्दशा के लिए किसी और पर दोषारोपण नहीं किया, न ही स्वयं की किसी गलती को सही ठहराने का प्रयास, शराब को भी नहीं ''शराबी बीमार होता है तो शराब की बहुत फजीहत होती है। मैं बीमार पड़ा तो शराब मुफ्त में बदनाम होने लगी। मुझे इस बात की बहुत पीड़ा होती थी, कुछ-कुछ वैसी, जो आपके प्रेम में पड़ने पर आपकी माशूका की होती है, जब लोग उसे आवारा समझने लगते हों। कुछ लोग प्रेम को चरित्र का दोष मान लेते हैं। शराब तो इतनी बदनाम हो चुकी थी कि शराबी को मलेरिया भी हो जाए तो लोग सारा दोष शराब के मत्थे मढ़ देंगे।''5

लेखक ने इस पुस्तक में अपनी सामान्य मानवीय कमजोरियों पर खुलकर लिखा है। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा हो जो कमियों से मुक्त होय पर अपनी सच्चाई को इस साहस के साथ लिख देने का कार्य तो विरले ही कर पाते हैं- ''यह सोचकर आज भी ग्लानि से आकण्ठ डूब जाता हूँ, माँ अपनी दवा के लिए पैसे देतीं तो मैं निस्संकोच ले लेता। वक्त जरूरत उनके हिसाब में गड़बड़ी भी कर लेता। कहना गलत न होगा, बड़ी तेजी से मेरा नैतिक पतन हो रहा था।''6 एक अन्य उदाहरण ''मेरी माँ की चिता धू-धूकर जल रही थी, तो मेरी प्रबल इच्छा हुई कि मैं जेब से सिगरेट का नया पैकेट जलाकर राख कर दूँ, जो मैंने शमशाम घाट जाने से जरा पहले मंगवाया था। सिगरेट मंगवाते समय भी मुझे बहुत ग्लानि और अपराधबोध हुआ था। अवसाद के उन मर्मान्तिक क्षणों में भी मैं अपनी क्षुद्रताओं और लालसाओं से ऊपर नहीं उठ पाया था।''7 ''शमशाम से दो ही रास्ते फूटते हैं, एक अध्यात्म की ओर हरिद्वार जाता है और दूसरा मयखाने की तरफ। मैं दूसरे रास्ते का पथिक रहा हूँ।'' ऐसी महत्वपूर्ण व साहसी स्वीकारोक्तियों से भरा पड़ा है संस्मरण लेखक।

अपना पूरा जीवन साहित्य को समर्पित करने वाले रवीन्द्र कालिया जी ने कितने साहित्यिक आन्दोलन देखे, कई पीढ़ियों के लेखकों और उनकी रचनाओं को बहुत करीब से देखा। साहित्यिक परिदृश्य व साहित्यकारों में व्याप्त अन्तर्विरोधों और दोगलेपन को देखा। बहुत बड़े-बड़े सात्यिकार कैसे गुटबाजी में शामिल रहते हैं, दूसरे लेखक को नीचा दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। अग्रज कथाकार अपने अनुजों से कितनी ईर्ष्या रखते हैं। सामान्य पाठक के लिए तो यह कौतूहल का विषय है। सामान्य जन के लिए तो साहित्यकार बड़े सम्माननीय और अनुकरणीय होते हैं। जब उसे अपने अनुकरणीयों के इस व्यवहार का पता चलता है तो वह खिन्न तो होता है पर कम से कम सच्चाई जान तो पाता है। 'गालिब छुटी शराब' एक ऐसी पुस्तक है, जिस पर अधिकतर प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने अपनी टिप्पणी की है। ज्ञानरंजन जी ने 'गालिब छुटी शराब' पर बड़ी सटीक टिप्पणी की है- ''हिन्दी में इस तरह से लिखा नहीं गया। हिन्दी में लेखक आमतौर पर नैतिक भयों और प्रतिष्ठापन के आग्रहों से भरा है। हिन्दी में बड़े और दमदार लेखक भी यह नहीं कर सके। तुम बहादुर और हमारी पीढ़ी के सर्वाधिक चमकदार लेखक हो। इस किताब ने तुम्हें हम सब से ऊपर कर दिया है। हिन्दी में यह अप्रतिम उदाहरण है।'' 'दिस बुक इज ग्रेट सक्सेस' यहाँ पर कमलेश्वर जी द्वारा की गई अभिव्यक्ति भी दर्शनीय है- ''एक ऐसे समय में, जो आदमी के विरुद्ध जा रहा है, जब आदर्शवाद, राजनेताओं, मसीहाओं पर से विश्वास उठना शुरू हो जाए, जब चीजें बेहूदी दिखाई पड़ने लगे जब संवाद का शालीन सिरा ही न मिले ऐसे समय में लेखकों ने खुद का उधेड़ना शुरू किया। पहले अपने को तो पहचान लो। देखो तुम भी वैसे तो नहीं हो। रवीन्द्र कालिया की 'गालिब की छुटी शराब' कितनी मूल्यवान पुस्तक है।''

इस पुस्तक पर बड़े-बड़े साहित्यकारों ने अपने-अपने ढंग से प्रतिक्रियाएँ दी हैं, साथ इस पुस्तक में भी लगभग सभी प्रतिष्ठित लेखकों ने स्थान पाया है और पूरा का पूरा साहित्यिक परिदृश्य पूर्ण जीवन्तता के साथ देखने को मिलता है। अमरकान्त जी की जीवनशैली को उकेरती ये पंक्तियाँ- ''उन दिनों अमरकान्त और शेखर जोशी भी करोलबाग कॉलोनी में रहते थे। सुबह चाय पिलाने दूधनाथ सिंह हम लोगों को अमरकान्त जी के यहाँ ले गये। अमरकान्त जी बाबा आदम के जमाने की कुर्सी पर बैठे थे। वह अत्यन्त आत्मीयता से मिले। उनके यहाँ चाय बनने में बहुत देर लगी हम लोगों ने उनके यहाँ काफी समय बिताया। दीन-दुनिया से दूर छल-कपट रहित एक निहायत निश्छल और सरल व्यक्तित्व था अमरकान्त का। हिन्दी कहानी में जितना बड़ा उनका योगदान था, उसके प्रति वह एकदम निरपेक्ष थे, जैसे उन्हें मालूम ही न हो कि वह हिन्दी के एक दिग्गज रचनाकार हैं। हाडमाँस का ऐसा निरभिमानी कथाकार फिर दुबारा कोई नहीं मिला।''9 अमरकान्त जी से भिन्न व्यक्तित्व अश्क जी का चित्रण- ''अमरकान्त जी के घर के ठीक विपरीत अश्क जी के यहाँ का माहौल था। गर्मागर्म पकौड़े और उससे भी गर्म-गर्म

बहस। कहानी को लेकर ऐसी उत्तेजना, जैसे जीवन-मरण का सवाल हो। उनके घर पर उत्सव का माहौल था, जैसे अभी-अभी हिन्दी कहानी की बारात उठने वाली हो। नये कथाकार अग्रज पीढ़ी को धकेलकर आगे आ गए थे, उससे अश्क जी आहत थे, आहत ही नहीं ईर्ष्यालु भी थे। राकेश-कमलेश्वर से उनकी नौक-झोंक चलती रही। एक तरफ वह परिमल के कथाविरोधी रवैये के खिलाफ थे, दूसरी ओर नयी कहानी या नयापन उनके गले से नीचे नहीं उतर रहा था। उनकी नजर में उनकी अपनी कहानियाँ ही नहीं यशपाल, जैनेन्द्र और अज्ञेय की कहानियाँ भी नयी कहानी की संवेदना से कहीं आगे की कहानियाँ हैं। हम लोगों यानि विमल, परेश और मेरे साथ अश्क जी की अकहानी को लेकर लम्बी बहस हुई। यह भी लग रहा था कि वह नए कथाकारों को चुनौती देने के लिए हमारी पीढ़ी को अपने सीमा सुरक्षा बल की तरह पेश करना चाहते थे। हम लोग नए बटुकों की तरह पूरा परिदृश्य समझने की कोशिश कर रहे थे।''10

कालिया जी स्वयं को एक कथाकार मानते हैं और 'कथा' को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं- ''मैंने जीवन में जो कुछ भी पाया कथा लेखन के कारण। जितना भी भारत देखा, कहानी ने दिखा दिया। जिन्दगी में शादी से लेकर नौकरियाँ, छोकरियाँ तक, गर्ज यह कि जो कुछ भी मिला, कहानी के माध्यम से ही। कहानी ओढ़ना-बिछौना होती गई। कहानी ने नौकरियों दिलवाई तो छुड़वाई भी। कहानी ने ही प्रेस के कारोबार में झोंक दिया। कहानी के कारण घाट-घाट का पानी पीने का ही नहीं घाट-घाट का दारू पीने का भी अवसर मिला।''11 क्योंकि कालिया जी का कहानी से अधिक लगाव रहा है इसलिए कहानी से जुड़े विभिन्न आन्दोलन और बहसों पर भी इस पुस्तक में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। यथा- ''कहानी के केन्द्रीय विधा के रूप में स्थापित हो जाने से 'परिमल' के खेमें में बहुत खलबली थी। कहानी समय के मुहावरे, वास्तविकता के प्रामाणिक अंकन तथा सामाजिक परिवर्तन के संक्रमण की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई थी। 'परिमल' काव्य की ऐंद्रजालिक और व्यक्तिवादी रोमानी बौद्धिकता को कहानी पर आरोपित करके कुछ कवि कहानीकारों- कुंवरनारायण, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर तथा कुछ कहानीकार कवियों निर्मल वर्मा आदि को नए कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित कराने के प्रयत्न में था। आज मुझे लगता है कि यह अकारण नहीं कि 'परिमल' एक भी सफल कथाकार उत्पन्न नहीं कर पाया। श्रीलाल शुक्ल अपवाद हैं जबकि वे अपने आप को परिमिलयन नहीं मानते। 'परिमल' की पूरी मानसिकता व्यक्तिवादी थी, जो कहानी को समाजोन्मुख धारा में एक नगण्य सा रूप बनकर रह गई थी।''12 नई कहानी आन्दोलन के सम्बन्ध में कालिया की यह टिप्पणी भी दर्शनीय है- ''राकेश, कमलेश्वर और यादव नई कहानी के राजकुमार थे, जिन्होंने कहानी के शहँशाहों को धूल चटाकर सिंहासन पर कब्जा कर लिया। लग रहा था कि वे किसी बिजनेस इंस्टीट्यूट से मार्केटिंग का डिप्लोमा लेकर कथाक्षेत्र में उतरे हैं।''13

साहित्यजगत में कितनी ईर्ष्या भावना, दोगलापन, स्वार्थ-लोलुपता, अहम् की भावना और स्वयं को श्रेष्ठ और दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश होती है। वार और पलटवार दोनों ही देखने को मिलते हैं। तब ऐसा लगता है कि व्यवसाय कोई भी हो, इन्सान की अपनी दुर्बलताएँ रहती ही हैं- ''भैरव जी ने साठोत्तरी पीढ़ी के कथाकारों को हरामियों की पीढ़ी कह दिया था और वह (दूधनाथ सिंह) इस बात से उत्तेजित था। वह गुस्से में पत्ते की तरह काँप रहा था। उसने बताया कि अभी अमरकान्त, शेखर जोशी और मार्कण्येय के साथ टहलते हुए भैरव प्रसाद गुप्त ने यह घोषणा की है।''14 इसका बदला भी लिया गया- ''कहानी के स्तालिन को जगाओ। कुछ हरामी उनसे मिलने आए हैं'' इस तरह अपना विरोध जताकर भैरव गुप्त ने भी अपने अपमान को कभी नहीं भुलाया ये बात अलग थी कि शुरूआत उन्होंने ही की थी। बदले की भावना में कहे गये शब्द- ''देखो जी यह है रवीन्द्र कालिया। मैं जब तक सम्पादक रहा, इनकी एक कहानी न छपने दी।''15 इतने बड़े लेखकों और सम्पादकों के बीच चलने वाली साहित्यिक बहसें आश्चर्यजनक तो लगती हैं आहत भी करती हैं पर यह सच है।

'गालिब छुटी शराब' में रवीन्द्र कालिया जी द्वारा लिया गया नरेश मेहता का साक्षात्कार और अनिता गोपेश द्वारा लिखा गया संस्मरण भी बहुत महत्वपूर्ण है। अमरकान्त जी ने रवीन्द्र कालिया जी पर जो संस्मरण लिखा 'रवीन्द्रः हँसना ही जीवन है' में 'गालिब छुटी शराब' पर बहुत महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं- 'गालिब छुटी शराब' करीब उपायहीन आत्मविनाश के कगार पर खड़े एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति की कहानी है, जो अद्‌भुत जिजीविषा एवं रचनात्मक इच्छाशक्ति से कर्म और उम्मीद की दुनिया में वापस आता है। आप सचमुच नहीं जानते कि यह चमत्कार कैसे हो जाता है। दूसरी खूबी इस रचना की यह है कि आज के समाज (सिर्फ लेखक ही नहीं) के अनगिनत लोगों की कथा है। तीसरी बात कि यह त्रासद विनाशकारी ज्वार में बुरी तरह फंसे ऐसे व्यक्ति के उबरने की ऐसी कथा है यह जो दार्शनिक हास्य व्यंग्य की शैली में कही गई है।''16

आत्मकथात्मक संस्मरण में लेखक स्वयं एक कथा सूत्र के तौर पर मौजूद रहता है। संस्मरण में आत्म की यह मौजूदगी थोड़ी कम भी था ना भी हो सकती है। आत्म की जितनी गादी मौजूदगी सांमरण में होगी उसका स्वरूप उतना ज्यादा आत्मकथात्मक होगा। 'गालिब छुटी शराब' ऐसी रचना है जिसमें सस्मृतियों को पूरी संजीदगी से तरतीब दी गई है। स्मृतियों की आद्यंत मौजूदगी के कारण यह संस्मरण-सी लगती है, पर रवीन्द्र कालिया अपनी मौजूदगी से इसे 'आत्मकथात्मक संस्मरण' जैसी विधा में बदल देते हैं।

रवीन्द्र कालिया के संस्मरणों विशेष रूप से 'गालिब छुटी शराब' में उनका आत्मकथात्मक लेखन उजागर हुसा है। लेखक ने उनकी मध्यपान की लत, तंगदस्ती, नैतिक पतन और व्यक्तिगत संघर्ष को बेधड़क से लिखा है। इसमें महानगर की विसंगतियाँ, बेरोजगारी, नारी संघर्ष, मद्यपान जन्य अंतर्द्वन्द्व और आत्मविश्लेषण को मुख्य विषय बनाया गया है। उनके संस्मरणों में व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से यथार्थ की सजीव और रोचक अभिव्यक्ति की गई है। डॉ. बिन्दु अग्रवाल लिखती है कि, 'गालिब छुटी शराब' इतना सहज और यथार्थ ढंग से लिखा गया है कि एक तस्वीर बनती है। मुझे तो नया अनुभव हो रहा है, जैसे सिमसिम का दरवाजा खुल रहा है हो। शराबी के व्यक्तित्व का अक्खड़पन, खुलापन और साथ ही भावुक मन स्पष्ट हुआ है। रवि ने परिस्थितियों को ज्यों-का-त्यों पकड़कर बड़े ही सहज और चित्रात्मक ढंग से व्यक्त किया है।''17 उपर्युक्त आधार पर स्पष्ट है कि रवींद्र कालिया ने संस्मरण विधा में एक ईमानदार और आत्मकथात्मक शैली विकसित की है, जो उनके निजी जीवन के अनुभवों को पाठक के सामने सजीव रूप में रखती है।

संदर्भ सूची

1. https://www.shabdankan.com/
2. कालिया, रवीन्द्रग़ालिब छुटी शराब :, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009, (पृ.7)
3. वही .पृ :-163
4. वही .पृ :-9
5. वही .पृ :-259
6. वही .पृ :-20

7. वही .पृ :-280
8. वही .पृ :-290
9. वही .पृ :-96
10. वही .पृ :-97
11. वही .पृ :-98
12. वही .पृ :-95
13. वही .पृ :-104
14. वही .पृ :-219
15. वही .पृ :-221
16. लमही सितम्बर-जुलाई), 2009, पृ .20)
17. कालिया, रवीन्द्रगालिब छुटी शराब :, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009 फ्लैप